भगवत् कृपा

स्वामी नारायण

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 25 अंक : 4 | 15.7. 2002, सोमवार (जुलाई-अगस्त) | वार्षिक चंदा : 50.00

गुरुपूर्णिमा...

24 जुलाई '02, बुधवार...

गुरुपूजन का - स्वसमर्पण का परम पवित्र अवसर नज़दीक आ रहा है।

आइये...

इस निमित्त सुबह 6:30 से 8:15

महाराज एवं आदि गुरु गुणातीत, ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज

व

सभी गुणातीत स्वरूपों का

पूजन करके धून, भजन, दर्शन, सत्संग से लाभान्वित हों...

सूचना :- जो उपरोक्त समय पर सुबह लाभ लेने नहीं आ सकते,
वे दिन में किसी भी समय आ करके 'गुरुपूजन' कर सकेंगे।

हर साल ...'पुरूषोत्तम मास' ?

हर साल की तरह अबकी बार भी **11 मई से 12 जून** तक एक महिने की 'जपयज्ञ शिविर'– मुमुक्षुओं का रिफ्रेशर कोर्स... एक साल की आध्यात्मिक खुराक... आत्मा का हेल्धी टॉनिक... प.पू. गुरुजी ने अत्यधिक परिश्रम लेकर सभी को दिया। पूरा एक महिना सुबह चार-सवा चार को उठ कर भक्तों के पहुँचने से पहले सुबह छः बजे तैयार बैठे मिलते... भक्तों की आँखें नम हो जाती कि आज '**गुरुजी**' हमारे लिए कितने गरजु बने हैं ? हम उनकी बातें लेकर चलते भी नहीं हैं, तब भी अनेकों गल्तियाँ नज़रअंदाज करके हर साल नई उमंग से साधना के बारीक-बारीक रहस्य खूब सरल भाषा में समझाते हैं...

प.भ. अरविंद मेहता सेठ ने सुबह 6:30 बजे इस 'जपयज्ञ शिविर' का उद्‌घाटन दीप प्रज्जवलित करके किया... अबकी बार सोने पे सुहागा कि 11 मई को ही अंग्रेजी तारीख के मुताबिक **प.पू. गुरुजी का 'भागवती दीक्षा दिन'** था। ठाकुरजी का पूजन करके सर्वप्रथम श्रीजी महाराज को खूब पसंद मोगरे के फूलों का हार प.पू. गुरुजी को अर्पण किया। प.भ. वच्छराजजी ने इस जपयज्ञ शिविर के बारे बताया कि– देसी महिनों में तीन साल में एक बार '**पुरुषोत्तम मास**'– जिसकी अत्यधिक महिमा मानी जाती है, वह आता है। हम पर प.पू. गुरुजी की कैसी करुणा कि उन्होंने हमारे लिए हर साल '**पुरुषोत्तम मास**' का सेटिंग कर दिया है। इस बार भी प.पू. काकाजी की परावाणी की कैसेट रखी थी। ऐसे संत द्वारा करी बातें समझने के लिए माया से परे की एक अलग दृष्टि चाहिए। प.पू. गुरुजी जैसे संत उस भाषा के गूढ़तम रहस्य हमें समझा सकते हैं। आइए, उन रहस्यों का '**श्रवण, मनन, निदिध्यासन**' करके उस मार्ग पर चलने अल्प प्रयास करें...

- जब तक माईन्ड है तब तक द्वंद्व है और तब तक कुरुक्षेत्र रहेगा ही। सद्‌गुरु मुक्तानंदस्वामी के भजन में एक लाईन है 'मननुं कृत्य मन लगी असत्य माने रे...' प.पू. काकाजी अलग ढंग से कहते कि मन का राज्य छोड़ो, सद्‌गुरुराज्य में एंटर हो जाओ। आज तीस-तीस सालों के बाद भी क्या हम कह पाएंगे कि हमने मन का राज्य छोड़ा ? **फिर भी हम चोरी पर साहूकारी करते हैं कि काकाजी ने हमारा क्या किया ?** जब तक मन के संग रहेंगे, तब तक दुःखी ही रहेंगे।
- तीस दिन प.पू. काकाजी को याद करके उनकी मूर्ति में लय और लीन होकर धून करेंगे, तो हमारी हर प्रकार की प्रॉब्लम्स यानि– व्यापार आदि की, मन की बीमारी की, घर में क्लेश, पति और पत्नी के बीच का मनभेद वगैरह डिज़ोल्व हो जाऐंगे। आप आजमा कर तो देखो। पर, 'भजन' मिकेनीकल नहीं करना।
- जीवन में यदि निर्भयता व निश्चिंतता चाहिए, तो प्रभु प्रगटाई हुई विभूति– जैसे अर्जुन के लिए कृष्ण मौजूद थे, हनुमान के राम मौजूद थे, शिवाजी के रामदास थे– वो होना खूब जरुरी है। **परोक्ष की भक्ति करने से संस्कार जरुर पड़ते रहेंगे, पर प्रारब्ध व प्रकृति बदलने के लिए मानवस्वरूप में तुम्हारे इष्टदेव प्रगटाई हुई विभूति मौजूद होनी ही चाहिए** और **साथ ही साथ उस विभूति के साथ तुम्हारा एक अनन्यभाव का संबंध होना खूब जरुरी है।**
- प.पू. काकाजी पर क्रिमिनल केस हुआ... उसके बाद फिर संस्था से विमुख कर दिए गए... एकदम चालीस संतों को संस्था ने निकाल दिया... अनेकों प्रकार से अपमान हुआ। पर, प.पू. काकाजी का मुँह कभी किसी ने उतरा हुआ नहीं देखा। वह निश्चिंतता इसलिए थी कि उनका योगीजी महाराज के साथ एक पक्का संबंध था। हमें तो इन्कम टेक्स की छोटी-सी नोटिस भी आ जाए तो ऐसा हो जाता है कि अब क्या होगा ?

  कोर्ट में एरेस्ट हुए... शाम को बेल पर रीलीज़ होकर आए... तब प.पू. पप्पाजी के मुँह से हम सबने सुना था कि बेल नहीं भी हुई होती तो क्या फर्क पड़ता है ? यहां बैठ कर भी भजन करना है, वहां जेल में बैठ कर भी भजन करते ! आज यह कहना आसान है, पर उस समय की परिस्थिति में...?
- जब तक माईन्ड के संग रहेंगे, तब तक हम ऐसे संत मिलने के बावजूद भी निर्भयता-निश्चिंतता, शांति नहीं अनुभव कर पाएंगे।
- **प.पू. काकाजी ने अपने प्रवचन दौरान पूछा कि–** मेरा पहला प्रश्न यह है कि तुम्हें प्रभु के अस्तित्व में विश्वास है ? प्रभु के अस्तित्व को मान कर उसमें जीवंत व जागृत श्रद्धा ! यह विज्ञान का या बुद्धिमत्ता का बिलकुल विषय नहीं है। श्रद्धा का है, भावना का है, मुमुक्षुता का है, इन्क्वाईरी का नहीं है। साईन्स में– जो सत्य दिखाई पड़ता है उस पर ही साईन्स जाती है, जबकि आध्यात्मिकता मुमुक्षुता पर।

  रामकृष्ण परमहंस कहां पढ़े-लिखे हुए थे ? पर केवल सिर पर हाथ रख कर विवेकानंद की अंतरात्मा को जागृत कर दिया ! संत तुकाराम, संत ज्ञानेश्वर जैसी संत

प्रणालिका बुद्धिवादियों की, पंडितों की, विद्वत्ता वालों की समझ में नहीं आएगी। यह भक्त हृदय का काम है, विद्वानों का काम नहीं है। शबरी के झूठे बेर, सुदामा के तांदुल, मीरां का हृदय, विदुर की भाजी शास्त्रों में लिखी गई, कोई धनवानों-सेठों के थाल नहीं लिखे गए।

प.पू. काकाजी

- हम बातें बहुत बड़ी-बड़ी करते हैं कि हम तो संत के साथ जुड़ गए हैं... हमारा तो एक संबंध है वगैरह। पर भीतर में झांकना कि– **'यह क्यों हुआ ? ऐसा तो नहीं होना चाहिए था, उन्होंने ऐसा क्यों किया' वगैरह तर्कों से ही हम परे हुए हैं क्या ?**
- भीतर में टटोलेंगे तो पता चलेगा कि हर एक को अभी भी कोई दुःख, बेचैनी, इरीटेशन, असंतुष्टि जैसी रहती है; क्योंकि **हमें भगवान के सिवा अपने मन के ढंग से और कुछ चाहिए।** पर, अगर हम **भगवान रखेंगे, तो उसके पीछे-पीछे सब कुछ आएगा... भगवान को छोड़ कर कुछ मांगने जाएंगे तो कुछ नहीं मिलेगा।**

  जैसे कि हमें लक्ष्मीजी चाहिए, तो पहले नारायण रखेंगे तो लक्ष्मीजी तो नारायण की पतिव्रता स्त्री है, सो वह पीछे-पीछे आएगी। **भगवान रखे संत हमें ये करामात बताते हैं।**
- स्वामिनारायण संप्रदाय की विशेषता यह है कि यहां प्रभु प्रगट हैं। **यह एक** नई चीज है, **नई फिनोमिना** है।
- हम सभी सिर्फ एक बात सोचें कि प.पू. काकाजी को भला हम से क्या स्वार्थ ? वो हमें क्यों गलत बातें करके मिसलीड-मिसगाईड करते ? पर, लगता है कि **शुरुआत से इस बारे हमारी शंका-आशंका रही होगी,** तभी तो श्रीजी महाराज को भी एक वचनामृत में यहां तक कहना पड़ा कि तुम लोगों को कुएं में डाल कर मैं ऊपर पत्थर डाल दूँ, उसमें मुझे भला क्या मिलने वाला है ? इतना तो सोचो।

मेरी सिर्फ एक ही भावना है कि प.पू. काकाजी के साक्षात्कार की स्वर्णजयंती के इस वर्ष में हम यही चीज पक्की करें कि गुणातीत स्वरूपों के साथ संबंध पक्का कर लेना है। ऐसा संबंध करके सुखी हो जाएं। **हम संबंध तो नहीं करते, बल्कि ऊपर से सयाने बनने की कोशिश करते हैं।** हम बहुत अच्छे हैं - उजले हैं, ऐसा दिखावा करते हैं, पर भीतर से उजले नहीं रहते।

मेरे और तुम्हारे में यह फर्क है कि तुम संबंध का दिखावा करते हो, जबकि मैं ऐसे संत के पास जैसा भी हूँ, वैसा पेश आता हूँ। पू. भरतभाई ने साक्षात्कार स्वर्णजयंती के फंक्शन में बात करी थी कि गुरुजी को कभी ऐसा विचार नहीं आया कि मैं पू. काकाजी को यह बात कर दूँगा तो पू. काकाजी फिर मेरे बारे क्या सोचेंगे ? चाहे एक ही एक बात मुझे सौ बार भी क्यों ना करनी पड़े ! मैंने ठान ही रखी थी कि जो कुछ है, वो यहीं से पाना है। मेरे मन में स्वामी की एक बात फिट बैठी थी कि इस साधु के द्वारा ही मेरा मोक्ष है। **मेरा जो कुछ भी भला-अच्छा होने वाला है, वो इस साधु की कृपा से ही होगा, ना कि कोई लायकात - काबिलियत से।** बस, यह बात अगर पकड़ी जाए तो फिर यह मन बीच में नहीं आएगा... जो कुछ पाना है, वो इस साधु से ही मिलने वाला है। उसके साथ का संबंध दृढ़ कर लें।

- प.पू. काकाजी की यही दिली ख़्वाईश थी कि हम सब एक कुनबे की भांति-कुटुंब की भांति एक-दूसरे से मिलजुल कर, एक-दूसरे के पूरक बन कर एकता से रहें। प.पू. काकाजी तो यहां तक कहते कि **'ब्रह्मस्वरूप वर्तने से भी सुहृद्‌भाव से वर्तना अधिक है।'**

  पर, **ऐसे संत जब सुनें कि इन दो भक्तों की आपस में नहीं बनती या फलां के साथ तो इसकी जमती ही नहीं। तब संत के दिल में कितने घाव लगते होंगे ? उनके दिल पर क्या गुजरती होगी ?**
- प.पू. काकाजी में यदि हमें विश्वास हो, **प्रीति हो तो सब कुछ छोड़ कर हम इस एक ही ट्रेक पर चलते रहें।** चाहे और कुछ हो पाए या ना हो पाए। बस **एकता से वर्तना शुरु कर दें,** तो बाकी सब चीजें अपने आप प.पू. काकाजी हमें बख़्शिश में दे देंगे।
- हम **कोई भी सेवा बहुत अच्छी तरह करें, पर यदि साथीदारों से मिलजुल कर नहीं करी होगी, तो उसका फल नहीं मिलेगा।** मिलजुल कर और एक-दूसरे का स्वीकार करके जो सेवा करी होगी, उसका ही फल मिलेगा। **हम अपनी इन्टेलीजन्स-बुद्धि छोड़ते नहीं हैं। सो, प्रभु हमें फेल कर देते हैं और तभी हम निराधार होकर भजन करने बैठते हैं।** प.पू. प्रमुखस्वामी महाराज ने इसे अलग ढंग से कहा कि बाकी सब आधार छोड़ देना, एक भगवान और संत का ही आधार लेना।

हम कई बार 'स्वामिनारायण-स्वामिनारायण' भजन तो करते हैं, पर सिर्फ जुबान से ही... तब हमारा मन तो कहां-कहां घूमता रहता है। **प्रगट स्वरूप की स्मृति में टोटल डूब कर लय और लीन होकर किया हुआ भजन ही हमें शांति देगा व स्वभाव-वृत्तियों का परिवर्तन करेगा।**

'गुरुपूर्णिमा' एवं **'रक्षाबंधन'** का मंगलकारी अवसर करीब आ रहा है... इन **'श्रवण, मनन, निदिध्यासन'** के अंतर्गत लिखे ब्रह्मसूत्रों से स्पष्ट ख्याल पड़ता है कि हमारे 'गुणातीत गुरु' की हम से

क्या ख़्वाईश है।

सो– '**करिष्ये वचनं तव**' अर्थात् उनके वचन को तत्काल स्नेह से मानें। '**प्रत्यक्षे गुरवः स्तुत्याः**' यानि– गुरु की स्तुति तो उसकी प्रत्यक्ष सन्निधि में - हयाती में ही करें।

गुरु आज्ञा– वही गुरुभक्ति !

गुरु के वचन से सेवा– वही गुरुपूजन !

गुरु का मानसपुत्र बनना– वही गुरुपूजन !

गुरु के जैसे ही गुण प्राप्त करना– वही गुरुपूजन !

गुरु परमेश्वर का चलता-फिरता स्वरूप है। वचनामृत गढडा प्रथम 27 में भी श्रीजी महाराज ने कहा कि– ऐसे गुणों वाले संत में प्रभु स्वयं सर्व प्रकार से निवास करके रहते हैं। श्रीजी महाराज ने ऐसे सद्गुरु की पहचान भगवान के परम एकांतिक संत, वड़वानल जैसे पुरुष, भगवान के रहने का धाम– अक्षरब्रह्म, भागवत् धर्म के पोषक, मोक्ष का द्वार और उत्तम भक्त जैसे शब्दों द्वारा कराई है। मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी ने भी कहा कि इस साधु को ब्रह्मरूप जान कर उसकी मन, कर्म, वचन से सेवा करना... सत्पुरुष में लगाव, विश्वास और निष्कपटभाव हो तो जीव ब्रह्मरूप हुए बिना रहे नहीं। जैसी परोक्ष देवों के प्रति प्रतीति है, वैसी अगर प्रत्यक्ष गुरु के प्रति हो जाए तो सभी कल्याणकारी गुण प्राप्त होते हैं। सो ही कहा गया है– गुरु की आज्ञा संशयरहित होकर विश्वासपूर्वक पालेंगे तो ही ब्रह्मज्ञान के अधिकारी बन सकेंगे। गुरु में दिव्यभाव– वही सच्ची आध्यात्मिकता है। गुरु में परमात्मा का दर्शन वही इस मार्ग की मंजिल है... जीवन की पूर्णाहुति है।

पूर्व के बलिष्ठ संस्कारों-पुण्यों के कारण '**गुरु**' **का मिलना जीवन का एक सौभाग्य है। पर, 'गुरुकृपा' यानि गुरु के अंतर की प्रसन्नता मिलनी – वह फिर जीवन की परम धन्यता है।**

गुरुहरि योगीजी महाराज को एक बार किसी ने पूछा कि– गुरुकृपा कैसे हो ? गुरुहरि योगीजी महाराज ने जवाब दिया कि– 'सत्पुरुष कहें ऐसा करें, अनुवृत्ति पालें, गुरु रात कहे तो रात, दिन कहे तो दिन !' तब गुरु कृपा होती है। **गुरु को यदि मन अर्पण किया हो, तो शिष्य को चाहे कैसी भी आज्ञा करते गुरु को भी संकोच नहीं होगा।** यूं कहें कि शिष्य को फिर ब्रह्मरूप करने गुरु कसनी में लेता है। मिट्टी कुम्हार की कसनी सहती है, तभी तो आकार बनता है न ? वैसे ही **गुरु शिष्य को चाहे कैसी भी कसनी में रखे, फिर भी आखिरी सांस तक उदास ना हो-थके नहीं, अपने मन का जँचता छोड़ कर गुरु के जँचते में रहे वो ही ब्रह्मभाव को प्राप्त करता है।**

सो, गुरु के वचन से ही सेवा करनी और उनके पास हमेशा सरल रहना ! भगवान और गुरु की अनुवृत्ति पालनी– वह भक्ति है। सो, गुरु का वचन तुरंत झेल लेना-नीचे नहीं गिरने देना। जैसे मछली स्वाति नक्षत्र में बरसती बरसात की बूंद झेल ले, तो उससे लाख रुपये का मोती बनता है। पर वही बूंद नीचे गिर जाए तो फिर उसका कोई मूल्य नहीं रहता। गुरु के कल्याणकारी गुण यदि पाने हैं, तो उसे सर्वज्ञ, निर्दोष व कल्याणकारी मानना अनिवार्य शर्त है।

प्रभुप्राप्ति के दुर्गम पथ पर पल-पल हमारे साथ हमारे जैसा हमसफ़र बन कर सतत हूंफ और प्रेरणा देने वाले गुरु का ऋण कभी भी चुकाया नहीं जा सकता। गुरु के इन महान ऋणों को भूले बिना उन्हें भक्ति-अर्घ्य अर्पित करने ही तो 'गुरुपूर्णिमा' का पवित्र पर्व मनाया जाता है।

तो क्यों ना प्रत्यक्ष संत की निश्रा में हम सभी मिल कर प.पू. काकाजी की साक्षात्कार स्वर्णजयंती के इस वर्ष में उनके 'सर्वदेशीयता' व 'सुहृद्भाव' तथा 'निर्दोषबुद्धि' के सिद्धांतों को जीवन की नींव बना कर सही अर्थ में '**सच्ची गुरुपूर्णिमा**' एवं '**सच्चा रक्षाबंधन**' मनाने कृतनिश्चयी बनें !

✡✡✡✡✡

चिदाकाश स्वरूप... प.पू. पप्पाजी

पहली सितंबर–प.पू. पप्पाजी की जयंती की महामंगलकारी दिन... अभी पिछले दिनों पहली जून गई, जिस दिन प.पू. पप्पाजी को गुरुहरि योगीजी महाराज में प्रभु की प्रतीति हुई थी... प.पू. काकाजी के साक्षात्कार की स्वर्णजयंती का यह वर्ष है ही, साथ-साथ प.पू. पप्पाजी के दृष्टा दिन की भी स्वर्णजयंती ! सो, यह पूरा वर्ष ही हम सभी के लिए खूब मंगलमय-आनंदकारी-आशीर्वाद रूप है।

प.पू. पप्पाजी यानि–स्वस्थता में हिमालय समान, स्थिरता में मेरू पर्वत समान, करुणा में आकाश समान, क्षमा में पृथ्वी समान, दासभाव से सेवा करके भूलने में हवा समान ! आज 86 साल की आयु में भी योगी के सेवक की अदा से अपने ध्येय की ओर हर क्षण सजग रह कर संबंध वालों को प्रभु की मूर्ति बांटती हुई विभूति !

प.पू. पप्पाजी यानि– अद्भुत ब्राह्मीशक्ति के धारक... प.पू. पप्पाजी का दर्शन सौम्य है, परंतु उनका कार्य भव्य है। बाह्य रूप से वे देखने में एक सामान्य व्यक्ति जैसे दिखाई पड़ते हैं, पर उनके भीतर में प्रगटाए 'स्वामिनारायण' संपर्क में आते हर एक को परम शांति

का अनुभव कराते हैं, अपनापन महसूस कराते हैं।

प.पू. पप्पाजी के जीवन की वास्तविकता व महत्ता यह है कि हर एक सत्य के मुताबिक पहले वे खुद वर्ते हैं, बाद में हमें बात करी है। उनके जीवन में दंभ व दिखावा नहीं है... धारण किए सफ़ेद वस्त्रों की भांति पूरा जीवन ही चिदाकाश रुप... जिसमें हल्का-सा भी दाग-धब्बा नहीं। उनका जीवन ही मुक्तों के लिए पथदीपक-प्रेरणा स्त्रोत है।

प.पू. पप्पाजी के जीवन का प्रथम विवेक यही है कि योगी का संबंध वाला यानि कल्याण के मार्ग पर प्रगति करता चैतन्य ! प.पू. पप्पाजी दिल की प्रमाणिकता से मानते हैं कि संबंध में आये चैतन्य के प्रारब्ध व प्रकृति इस्तेमाल करके, प्रभु उसे शुद्ध चैतन्यब्रह्म बना कर ही छोड़ेंगे। सो, कभी भी– कैसे भी संजोगों में हम भगवान के भक्तों का अभाव लें ही नहीं और प्रत्यक्ष गुरुहरि में प्रतीति होने के बाद दिमाग बिलकुल बंद करके उसमें संपूर्ण रूप से लय और लीन हो जाएं। मन-बुद्धि बंद करके उन्हें दिव्य व अंतर्यामी मान कर सेवन कर लें !

उनका समग्र जीवन चैतन्यलक्षी है। प्रभु की निष्काम भक्ति करने खुद का सर्वस्व अर्पण करके वे आज सैकण्ड-सैकण्ड 'योगी' के प्रति अपनी भक्ति अदा कर रहे हैं... यूं वे लोक, भोग, देह, पक्ष किसी के भी नहीं हैं, उनका रोम-रोम सिर्फ 'श्रीजी' और 'योगी' का ! संतों, गृहस्थों, बहनों, युवकों के वे प्राणाधार हैं; सो गुणातीत समाज के मुकुट समान प.पू. पप्पाजी की सेरेछाया–उनका अस्तित्व ही हमारे लिए सबसे अधिक है।

और... प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी व प.पू. बा की त्रिपुटी ने खूब कसनी सहन करके जो दिव्य परिवार खड़ा किया, अपना गिन कर, पाला-पोसा... उसके पीछे हेतु-भावना एक ही थी कि ऐसे सामूहिक जीवन में **हम एक-दूसरे के पूरक बनें** और **जल्दी से जल्दी हमारा जीव ब्रह्मरूप होकर परब्रह्म का अखंड धारक बने।** और... तभी तो आज 86 वर्ष की आयु में भी हमारे चैतन्य की प्रगति के लिए प.पू. पप्पाजी की वह लगन ज़रा भी कम हुई दिखाई नहीं पड़ती।

हे पप्पाजी ! योगी परिवार के उजले भावि के लिए आपने व प.पू. काकाजी ने हम से जो आशा व विश्वास रखा है... **'एकता वही एकांतिकभाव'** का सूत्र जो आपने हमें घुंटवाया है, उसी को हम जीवन का ध्येय बना कर जीवंत रखें।

सर्वोच्च ब्राह्मी स्थिति पर होते हुए भी आज संबंध वाले मुक्तों की सेवा करने जिस प्रकार आप हर सैकण्ड तत्पर बने रहते हैं, उसी प्रकार हम भी सामने आए मुक्त को सिर का ताज मान कर आपको 'ठण्डक' कर दें। आपके क्रियायोगों में जो सरलता, ममता और विशेष रूप से निर्दंभता दिखाई देती है, वह सभी के अंतर को स्पर्श कर जाती है। हमारा जीवन भी ऐसा सहज बने ऐसी कृपा बरसाना और आपका दिया निम्न **'पंचामृत'** हमारे जीवन का आधार बने–

1. अखंड जपयज्ञ किया करना।
2. इस पल नीरव व धामरूप रहना है। उस पल का पथप्रदर्शक प्रभु बनें और यूं जीवन जीने का बल मिले।
3. आध्यात्मिक समताभरी निर्दोषबुद्धि सभी में हर पल, हर प्रसंग पर रखनी।
4. संबंध वालों की माहात्मय युक्त सेवा कर लेनी।
5. किसी का कुछ भी चुभे तो 11 बार ऊँचे स्वर से 'स्वामिनारायण' मंत्र बोल कर प्रायश्चित कर लेना !

हे पप्पाजी ! हमारा परम सौभाग्य है कि आपकी गोद मिल गई है। हमें विश्वास है कि आप पूर्ण मिले हैं और हमें पूर्ण करके ही छोड़ने वाले हैं। परंतु अब प्रत्येक पल हम प्रभु का कर्ता-हर्तापन मान कर, मुक्तों की दिव्य लीला का दर्शन करके आप जो अक्षरधाम की मौज देने धरती पर पधारे हो– आनंदोब्रह्म ! वो जल्दी से जल्दी लेते हो जाएं... आपके अथक् परिश्रम को अब सार्थक करें ऐसी आपके प्रागट्य दिन पर प्रार्थना !

✡✡✡

स्वर्णशिविर के पंडाल से– 'भोजनम् ज्ञानामृतम्'

[29 मार्च '02, सुबह]

प.भ. पुरी साहेब

... आज हमारे इस शिविर का प्रथम दिन और जैसे कि होली को मंगल मिलन दिवस के रूप में मनाने का संकल्प और उसमें गुरुजी ने एक नया आयाम जोड़ा। गुरुजी को ये कैमीकल्स से बने हुए रंग पसंद नहीं है। तो पिछले तीन साल से प.पू. गुरुजी ने एक नई शुरूआत करी कि होली के दिन हम सभी लोग एकत्रित हों; पहले तो गुरुजी की निश्रा में बैठ कर आनंद लें और उसके बाद गुरुजी चंदन से तिलक करें और उस चंदन की भीनी-भीनी सुंगध में होली के बाद का– जैसे कहते हैं कि होली के दिनों के बाद शुभ

दिन शुरू होते हैं– वैसे तो हम लोगों के सभी दिन शुभ, लेकिन चंदन की भीनी-भीनी सुगंध के साथ हम अपने होली के बाद के दिनों का प्रारंभ करें... ये तीन दिन का जो शिविर है, उसमें हमें प.पू. गुरुजी से, प.पू. दिनकरभाई से, प.पू. भरतभाई से, प.पू. स्वामिजी से, प.पू. साहेब से व दूसरे सभी भक्तों व संतों से प.पू. काकाजी की वाणी का निरूपण सुनना है, उस पर मनन करना है और उसका आनंद करना है– बस तीन दिन हमें यही कुछ करना है...

प.भ. राकेशभाई

... हमारा होली खेलने का ढंग अलग– क्योंकि हमारा ये जो समाज है, भले दिखता जगत जैसा ही है, लेकिन जगत से एकदम निराला ये है। क्योंकि **हमें जो पूरूष मिले हैं-सत्पुरुष मिले हैं वो और कहीं नहीं मिलते हैं, ऐसे निराले हैं।** तो, उनकी निश्रा में हम जो होली मना रहे हैं– पिछले सालों से जो प.पू. गुरुजी होली मनाते हैं, वह **प.पू. काकाजी का वचन ध्यान में रख कर कि उनको रंगों से होली खेलना पसंद नहीं था, तो चंदन की ये होली...**

[29 मार्च '02, सायं]

... प.पू. गुरुजी ने तब जो रहस्य बताया, जो भावना बताई कि इस अवसर को कैसे हम आयोजित करें; जिससे कि गुणातीत समाज के सभी सदस्यों को, हर एक साधक को, मुमुक्षु को–जहां पर भी वह है उस प्लेटफोर्म से आगे जाने की एक सूझ मिले, एक मार्ग मिले, एक दिशा मिले...

प.पू. गुरुजी

ये शिविर करने की पीछे की भावना बतानी है। मैं कई बार अपने बारे ये सोचता हूँ कि अगर काकाजी ना होते, तो मेरा धड़ा कौन करता ? 'धड़ा' का मतलब आप समझते हो ? अब तो तैयार पैकेट्स मिल जाते हैं। पहले ऐसा कुछ लेने जाते थे, तो घर से बर्तन लेकर जाते थे। जो चीज हमें चाहिए होती है उसके लिए पहले बर्तन का तोल करते थे। तो, तोल करने के लिए वो बर्तन मांगे, इसका मतलब कि वो चीज वहां से मिलेगी। अगर वो नहीं देने वाला हो या चीज नहीं हो, तो वो 'धड़ा' ही नहीं करता। इस तरह हमें काकाजी ने जो लिए वो ही बहुत बड़ी चीज हो गई। अपने जीवन की सबसे अहम् घटना कि काकाजी ने हमें स्वीकार किया।

दूसरी बात– **काकाजी के साक्षात्कार की स्वर्णजयंती की अहमियत की।** मैं यह समझता हूँ कि हमारे लिए–खास करके गुणातीत समाज के लिए ये साक्षात्कार की स्वर्णजयंती के अंतर्गत हमारे सारे फंक्शन्स आ जाते हैं। जब काकाजी को योगीजी महाराज ने साक्षात्कार कराया, तब इन्होंने जो दर्शन पाया - सुख पाया - आनंद पाया– वो कैसे दिलेर ? कि **इन्होंने महाराज के पास उसी समय माँग लिया कि मेरे साथ जिन-जिन को लगाव हो, जिन-जिन को मेरा संबंध हो– वो मेरा भाई, मेरी बहन, मेरी माँ और मेरे साथ जुड़े सभी को ये सुख मिले** ! काकाजी कई बार बोलते थे कि गुणातीत का संकल्प महाकाल ! तो इन्होंने ये जो संकल्प करा और हम इनके संबंध में आ गए, **इसीलिए हम सभी निहाल हो गए हैं।** इनके उस संकल्प से आज हम सब इस जगह पर बैठे हुए हैं। **इन्होंने ये संकल्प ना करा होता, तो हम तो जैसे सब जगहों पर सत्संग चलता रहता है, वैसे ही करते रहते।** जिसको सनतभाई ने बोला था– **चीला-चालू सत्संग** !

...हरिधाम में काकाजी की साक्षात्कार की स्वर्णजयंती मनाई गई और हम लोग वहां जा नहीं पाए। दूसरी तरफ उत्तर के लिए जो काकाजी ने सबसे पहले पहल करी, जो परिश्रम उठाया वो सारा कार्ड के अंदर लिखा हुआ है। यहां साईकिल रिक्शाओं में घूमें हैं, उस समय ऐसी गाड़ियाँ वगैरह भी नहीं थीं। एक बार तो काकाजी आने वाले थे। हमारे संपतजी अभी तो नहीं हैं, वे स्टेशन लेने गए थे। लेकिन उनसे पहले तो स्कूटर में काकाजी मंदिर आ गए ! और सबसे पहली बार जब काकाजी चेयर कार में डिलक्स से आए, तब हमने अपने आप में ये समझ लिया कि अब हमने काकाजी के लिए बहुत सुविधा कर दी। आज वो चेयर कार में कोई मुझे जाने को कहेगा, तो मैं सोचूंगा कि बीस घंटे चेयर कार में कैसे बैठ पाऊंगा ? ये सब बीते हुए दिनों की कहानियाँ हैं। लेकिन वो सारा याद करके मुझे हुआ कि काकाजी ने जिस सिद्धांत को, जो आदर्श नज़र में लेकर के ये सत्संग की नींव डाली है, उसका

१९५२-२००२
प्रथम अनुभव ने ५० वर्ष
50
साक्षात्कार स्वर्णजयंती

उत्तर के मुक्तों को भी थोड़ा ख्याल पड़े। क्योंकि ह्युमन माईन्ड ऐसा है कि समाज में जो चलता रहता है, उसका प्रभाव हम पर पड़ता रहता है। **आज हर जगह देखोगे तो बड़े-बड़े गेधरिंग्स, बड़े-बड़े सेलिब्रेशन्स, बड़े-बड़े एग्ज़ीबीशन्स, बड़ी-बड़ी शोभायात्राएं, बड़ी-बड़ी रेलियाँ...!** ये हमारी वीकनेस भी है कि हम सब ये देख कर जो आते हैं, तो होता है कि हम भी ऐसी रेलियाँ निकालें, हम भी ऐसा एग्ज़ीबीशन्स करें।

पर, काकाजी ने एक बार मुझे बात करी थी, जैसे कि आप सभी जानते हो– काकाजी रात को जगते थे। फिर चाय-वाय के साथ कहीं सेव-मुरमुरे का नाश्ता लेते... फिर कुछ पढ़े-करें या सेवक जगा हो तो उसके साथ कुछ बातें करें। तब एक बार मैंने काकाजी को पूछा... मुझे कुछ ऐसी बात मिली थी कि अमेरिका में काकाजी ने बापु को कहा कि बापु तू यदि यूं समझता हो कि हम यहां आएं और एयरपोर्ट पर लेने के लिए बड़ी-बड़ी गाड़ियों की लाईन लग जाए, **वो हमें नहीं करना है।** मुझे ये बात मिली थी, तो मुझे एकदम हुआ कि क्या सच में ऐसा कहा होगा ? सो, मैंने काकाजी को पूछा कि काकाजी आपने बापु को ऐसा कहा था ? इसका जवाब इन्होंने ये दिया कि– 'इसमें मैंने गलत क्या कहा ?' तब मैंने कहा कि आपने सच भी क्या कहा ? फिर मुझे कहते हैं कि देख एक बात कहता हूँ कि आज ये डोंगरे महाराज, मोरारी बापु वगैरह सारी सप्ताहें करते हैं। हज़ारों लोग इकट्ठे होते हैं, राम की और कृष्ण की कथा होती है। लेकिन वो रामायण में या भागवत् में कोई भी जगह पर एक ऐसा इन्सीडन्स हो, तो मुझे निकाल कर बताओ कि जिसमें राम या कृष्ण बैठे हुए थे और बड़ी सभा लगी हुई थी और चालीस हज़ार लोग इकट्ठे हुए थे– पचीस हज़ार लोग इकट्ठे हुए थे। अरे ! उनका जीवन तो पाँडवों में, गोपीयों में, वहाँ बंदरों में और ये चार भाईयों के बीच चला गया। **असली जो संत हैं, वो ये गेधरिंग कभी एक्स्पेक्ट नहीं करेगा, ना ही उसकी कोशिश भी करेगा। होगा तो कोई ऐसा चरित्र कर देगा कि वहां जो भीड़-भाड़ इकट्ठी होती हो, वो होगी नहीं।** फिर मुझे पू. बेचरकाका की बात करी। बापा अफ्रीका गए थे; साथ में काकाजी वैगरह थे, छगनभाई भी थे। बेचरकाका के घर पधरामनी थी। छगनभाई को बेचरकाका के साथ अच्छी लिंक थी। छगनभाई के मन में ऐसा कि अगर ये बेचरकाका के यहां बापा कोई करिश्मा दिखाएं, तो इनके यहां जो बड़े-बड़े डिग्नीटरिज़ आते हैं, इन पर अच्छा प्रभाव पड़ जाए। दूसरी ओर बेचरकाका यानि चुस्त आर्यसमाजी। परसोनिफाईड गॉड हेड में तो वो माने ही नहीं ! वो बेचरकाका को यदि पक्का हो जाए, तो उसके जरिये दूसरों पर सत्संग का प्रभाव पड़ जाए। बापा से बातचीत करी– बापा आप यहां ठाकुरजी को थाल धराओ। ये आर्यसमाजिस्ट मूर्तिपूजा में मानते नहीं हैं और ये ठाकुरजी के थाल में से भगवान कुछ खाएं, तो इसको एक प्रतीति हो जाए कि मूर्ति में भगवान रहते हैं। पर, भीतर में बात वो ही होगी कि हर एक को अपने सत्संग के प्रति खिंचाव हो जाए, एक एट्रेक्शन बन जाए-इन्फ्लूएन्स पड़ जाए। बापा ने कहा कि इसमें क्या ? हम यहां कल थाल करेंगे और महाराज खाना खा जाएंगे। छगनभाई ने बेचरकाका को बात करी कि कल तुम्हारे यहां बापा भगवान को थाल खिलाएंगे। वहां बेचरकाका ने तो सारे डॉक्टर्स, एडवोकेट्स वगैरह हाई-फाई लोग-सब को बुला दिए और कहा भी कि आज हमारे यहां योगीजी महाराज– जो इंडिया से आए हैं, वो भगवान को थाल खिलाएंगे। सब आए थे, बापा ने भी थाल के आगे पर्दा लगवाया और बापा जो थाल बोलते थे, वो तो जिन्होंने उन्हें देखा हैं इन्हें पता है। पूरा पौना घंटा पाँच थाल बोले। फिर कहें कि अब पर्दा खोलो, तो थाल में तो जो चीजें थीं वो ज्यों की त्यों ! भगवान ने अगर खाया हो, तो आधी पूरी का कटका तो उसमें से निकला होता ! जो ये करवा रहे थे, इन सब के मुँह तो कैसे हुए होंगे वो तो हम समझ सकते हैं। सब सन्न से हो गए; छगनभाई ने बापा को कहा भी कि बापा ठाकुरजी ने खाया नहीं। बापा ने एकदम कहा कि थाल में से रसोईये ने कुछ चखा होगा, पता करवाओ। अब ये सारी बातें कैसी हैं कि हम मान लेंगे कि बराबर हैं, रसोईये ने खाया, सो झूठा हो गया; भगवान ने नहीं खाया। लेकिन जो दूसरे बाहर के आए होते हैं, वो तो कहेंगे कि ये सारी लीपापोती है। फिर तो वहां जो कार्यकर्ता होंगे इन्होंने किसी तरह भी वो बात को संभाली। आने वाले समाज को तो भगवान ने खाया होता तो भी ठीक है, नहीं खाया तो भी फर्क क्या पड़ता है ?

लेकिन बेचरकाका अपने थे और मैं समझता हूँ कि काकाजी की निगाह में होंगे, योगीजी महाराज की निगाह में होंगे; पूर्व के होंगे। बापा उस दिन रात को वहीं ठहरे थे। तो, रात को बेचरकाका को एकदम चंदन की खुश्बू आने लगी और वो इतनी तीव्र कि वो जग गए और विचार में पड़े कि ये खुश्बू कहां से आती है ? फिर वो अपने मकान में घूमे, तो इन्होंने देखा कि बापा जिस रुम में सोए थे, वहां से चंदन के चरणार्विंद की सारी छाप पड़ी हुई थी–गेट तक। उन्हें बड़ा ताज्जुब हुआ, फिर ख्याल आया कि ये तो महाराज के चरणार्विंद हैं। तो जो प्रतीति उनको करानी थी, वो योगीजी महाराज ने करा दी और आप देखते हैं कि बेचरकाका उसके बाद आऊटराईट गुणातीत समाज के हो गए। गुणातीत समाज के हुए मतलब-प्रभु के होकर जीए।

फिर काकाजी ने कहा कि ऐसे टोले इकट्ठे करने होते, तो बापा थाल नहीं खिला सकते थे क्या ? रात को बारह बजे पगले पाड़े उसके बदले ! तो, इससे हमें बापा क्या सिखाते हैं ? कि उस रास्ते हमें जाना ही नहीं है। सो, जैसे पप्पाजी कई बार कहते हैं– **'हम सब काकाजी के कहे जाते हैं'**– वे हम उस रास्ते पर चले ही नहीं। उस रास्ते की ओर निगाह रखें ही नहीं। अगर हम चलने जाएंगे भी ना, तो काकाजी कुछ ऐसा रोड़ा बीच में ला देंगे कि हमें यू टर्न ले ही लेना पड़े। ये हम पर इनकी ख़ूब करुणा कहो, कृपा कहो, आशीर्वाद कहो या हम पर काकाजी का हट कर लगाव कहो कि उस रास्ते, उस गली के अंदर हमें जाने ही नहीं देंगे। उसमें से मुझे विचार आया कि **काकाजी के साक्षात्कार की स्वर्णजयंती** जब **मनानी है, तो दूसरा कुछ करने के बजाय हम सब योगी परिवार के** जिसे मैं हमारा सयुंक्त परिवार मानता हूँ वो **इकट्ठे होकर काकाजी ने जो कई बातें करी हुई हैं, ये** तीन दिन– **उनकी टेप सुनेंगे।** उसमें समझाने जैसी तो कोई चीज होती नहीं है, लेकिन **टेप सुन करके– हम जो हमारे रास्ते से कई बार हट जाते हैं; हट नहीं भी जाते होंगे, लेकिन कहीं गली कूचीयों में जाने के लिए लालायित हो जाते हैं– वो ना हों इसीलिए ये एक शिविर का आयोजन करने का सोचा**... और हमने देखा कि होली, धुलेन्डी भी साथ-साथ आ रही है। होली अपना एक ऐसा त्यौहार है कि इस दिन सब गिले-शिकवे भूल करके हम एक दूसरों के गले मिलते हैं। मैंने सोचा कि ये बहुत अच्छा दिन है, भगतजी महाराज की जयंती का भी दिन– होली का दिन ! और कहते हैं ना कि जब एक परिवार रहता है साथ में, तो कुछ ना कुछ बर्तन टकराते ही हैं। हमें हमारी गल्तियों के कारण या सामने वाले की गल्तियाँ नज़र में लेते हुए, **आपस का गिला-शिकवा जो हो वो भूल जाएं, लेकिन फिर उसी रास्ते हमें दोबारा नहीं चलना है।** अगर हम दिल की सच्चाई से मानते हैं कि हमारी ये गलती हुई है, हमारी समझ में कुछ फर्क पड़ा हुआ है; तो **वहां से रिट्रीट ही कर लें**, जिसको काकाजी अलग तरीके से कहते थे 'आनरेबल रिट्रिट' करो। काकाजी का शब्द है, प्रसादी का शब्द है। चर्चिल के बारे वे कहते थे कि जर्मनी से लड़ते हुए जब उसे पीछे हठ करनी पड़ी थी, चर्चिल यह नहीं कहता था कि हम भाग गए। वो कहता था कि हमने आनरेबल रिट्रिट करी ! देखो, काकाजी एक ऐसी विभूति थी कि हमारी पीछे हठ से हमारा प्रेस्टीज इश्यू भी हर्ट ना हो, उसका तरीका भी बताते थे। काकाजी की कई चीजें मैं यूं भी याद करता हूँ कि, ऐसी चीजें अब कौन हमें समझाएगा।

देखो, अब की ही एक बात है और आप जो बैठे हुए हो, वो सब कहोगे कि सारे गुणातीत समाज में इस बात का ऐसा सोल्यूशन काकाजी ही दे सकेंगे। अभी थोड़े दिन पहले क्या हुआ कि ये मंदिर में कोम्प्यूटर आया। कोम्प्यूटर बड़ी हेल्पफुल चीज है। पर मैंने पहली बार उसका वर्कींग देखा, कि जो काम करने में पंद्रह-बीस दिन लगें, वो कोम्प्यूटर तुम्हें पाँच-सात मिनिट में कर दे ! ये मेरी कल्पना के बाहर की बात थी। मैं तो सोच भी नहीं सकता था कि पंद्रह-बीस दिन में जो काम हो, वो कोम्प्यूटर पाँच-सात मिनिट में कर दे। मुझे बड़ा इसमें इंट्रेस्ट पड़ गया। तो उसकी टेक्नीक तो मुझे समझ नहीं आती थी, लेकिन थोड़ा बहुत बटन वगैरह कैसे दबता है, मैं देखता रहता था– जब हमारे अक्षरस्वामी और आशिष कार्ड वगैरह का डिजाईनिंग करते थे। मैं पहले क्या समझता था कि ये कलर्ड पिक्चर जो कोम्प्यूटर में दिखाई पड़ता है, तो अंदर कुछ कलर्स भरे होंगे और जैसे परसेन्टेज़ हम चाहते हैं, वो सेट करने पर वो कोम्प्यूटर अंदर कलर दिखाता होगा। बिल्स वगैरह भी कोम्प्यूटर की इंक वगैरह के तो आते ही थे। लेकिन वो मुझे पता नहीं था कि ये प्रिंटर के लिए होती है, कोम्प्यूटर को इससे कुछ लेन-देन नहीं है और कहीं मैं कहता कि ज़रा कलर हल्का कर दे, कलर डार्क कर दे, ये कलर बदल दे–तो वो फट्-फट् कर देते थे और मैंने फिर ये अक्षरस्वामी से पूछा कि इसमें कलर कहाँ भरे होते हैं। मानो वो ट्यूब्स कहाँ रखी होती हैं ? तो वो हँस पड़ा और कहता है कि गुरुजी, इसके अंदर कोई कलर नहीं होता !

वो चीज मुझे दिमाग में फिट हो नहीं रही थी और दूसरी ओर मुझे ये कि तुम कलर ट्यूब्स वगैरह तो मँगाते रहते हो। उन्होंने कहा कि वो तो प्रिंटर के लिए होती है। जब प्रिंट निकालते हैं, तो वो कलर उसमें से आता है, स्क्रीन के ऊपर तो कोम्प्यूटर वैसे ही दिखा देता है। मैं सोचूं कि बिना कलर के, अंदर क्या मिकेनिज़्म होगा कि हमें कलर दिखाए। वो कलर दिखाए वो बात भी समझ सकता हूँ, लेकिन हम कहें कि दस प्रतिशत कम कर दो, हल्का कर दो, वो करके दिखाए– विधाऊट कलर ! वो बात मेरे दिमाग में जमी नहीं। फिर मैं सो गया और सोचते-सोचते सो गया कि ये बिना कलर के कोम्प्यूटर कैसे वेरियेशन्स ऑफ कलर दिखाता है ? तो मैं लेटे-लेटे करीब घंटा-डेढ़ घंटा उस पर सोचता रहा। मेरा पहले से ऐसा है कि कोई फितूर दिमाग में घुस गया, तो जब तक उसका सोल्यूशन नहीं मिले, वो अंदर कुरेदता रहेगा। फिर मुझे नींद आ गई करीब साढ़े चार बजे ! फिर सपने में काकाजी आए। एकदम मुझे डाँटने लगे कि इसके पीछे समय खराब करना है ? इस विचार में समय खराब करना है ? ढाई से चार यह तूत लेकर बैठा, इसके बदले बापा को याद किया होता तो? मेरे पास तो कोई जवाब था ही नहीं। अब जो इन्होंने समझाया, वो आप हर कोई कहोगे कि मुकुंद के दिमाग

को इस तरह काकाजी ही सेट कर सकते हैं। कहते हैं कि– कलर कैसे दिखता है यही तुझे जानना है ना ? तू भेजे में कल्पना करता है, गुलाब– गुलाबी रंग होता है ना ? अंदर दिखाई देता है ना ? तो क्या तेरे भेजे में कलर भरे हैं ? कोम्प्यूटर ब्रेईन की थियोरी पर वर्क करता है। इसमें क्या विचार करना कि इसमें कलर नहीं है, तो कलर कैसे आया ? तेरे भेजे में कहां कलर हैं ? तो भी तू विचार करता है कि गुलाब, तो गुलाबी दिखाई देता है, पत्ता– हरा दिखाई देता है भेजे में। यह कोई इतना विचार करने की बात है ?

आप हर कोई कहोगे ना कि इस तरह का सोल्यूशन काकाजी ही दे सकते हैं और मेरे माईन्ड में भी सेट हो गया कि हाँ, बराबर है कि जैसे ब्रेईन में दिखाई पड़ता है, वैसे ही इसमें दिखाई पड़ता है।

तो मेरा कहना यह है कि **काकाजी से** ऐसी-ऐसी चीजें हमने खूब सुनीं, लेकिन हमारी नादानी कहो, हमारी चौधराहट कहो, उस **बात को हमने पकड़ी नहीं और अब तक नहीं पकड़ी है।** हाँ, एक दिशा जरुर नज़र में है। तो ये शिविर हमें इसलिए करनी है कि उस दिशा की ओर अब हमारे कदम उठें। वर्ना तो जैसे स्वामिनारायण सम्प्रदाय के लिए बोला जाता है ना– तगारा, नगारा और फावड़ा स्वामिनारायण के यहां चलते ही रहेंगे, वो ही करते रहेंगे। लेकिन जो काकाजी कराना चाहते थे और अपनी जो ये गुणातीत परंपरा की बात है– तीसरे प्रकरण की 120 की–कि बाकी सब कुछ कराने वाले मिल जाएंगे, ये खेती-बाड़ी, मंदिर की आमदनी कैसे बढ़े उसकी टेक्नीक्स भी दिखाने करने वाले बहुत मिलेंगे, लेकिन उपासना, आज्ञा और जो ज्ञान सीखना...? ओहो ! काकाजी का तो हमने देखा था– **सुबह छः बजे उठें, तब से शेविंग का रेज़र हाथ में लेते हुए जो बातें शुरु करें–उनके सामने आने वाली व्यक्तियाँ बदलती रहें, लेकिन रात को ग्यारह बजे तक उनकी बातें चलती रहें, चलती रहें, चलती रहें।**

तो ये तीन दिन हमें कोई नई कथावार्ता अपनी ओर से नहीं करनी है। मैं तो चाहता हूँ कि तीन दिन काकाजी की कैसेट सुनें। दिनकरभाई जैसे आए हैं, साहेब आने वाले हैं। स्वामिजी की बात तो अलग ही है, उनके आशीर्वाद तो उनसे लेने हैं। लेकिन **ये कैसेट का हार्द हम समझ कर यहां से जाएं, वो सच्ची स्वर्णजयंती मनाई !** जिसके फलस्वरूप जो थोड़ा-थोड़ा, पतला - पतला, अंतराय रह जाता है, वो निकल जाए। अगर हम कहते हैं कि हम काकाजी के हैं, तो एक बात खूब समझना, काकाजी का एक सेन्टेन्स है–

मैंने तो सब कुछ साझा गिना है। साझा में सिर्फ प्रापर्टी नहीं, प्रापर्टी तो है ही है। हम मालिक हैं ही नहीं, बनने भी जाएंगे तो महाराज होने नहीं देंगे। पर, ये पुरी तो कि ये तो मेरा है, ओ.पी. तो कि मेरा है, अग्रवाल तो कि मेरा है यूं मानें, तो वो हम काकाजी के नहीं हैं, हकीकत में नहीं हैं। ये सारी चीजें निकल जाएं, ये कचरा निकल जाए। ये दिनकरभाई आए हैं, साहेब आने वाले हैं– वो सब हमारे लिए संकल्प करें कि हम सच में काकाजी के हों। **काकाजी का बैनर लेकर घूमते रहेंगे, उसका तो कोई अर्थ ही नहीं है। हमें देख कर हर एक को लगे कि ये काकाजी के सिद्धांत पर चले हुए हैं, चलने की कोशिश कर रहे हैं।** चल ना पाएं उसका भी हर्जा नहीं है, क्योंकि स्वामी की बातों में लिखा है कि जो चलने के लिए रुचि रखे उस पर भी इतनी ही प्रसन्नता है। तो वो प्रसन्नता– **सोलह साल तो इनको अंतर्धान हुए – स्थूल शरीर छोड़े हुए हो गए... अब नहीं चलेंगे तो कब चलना है हम सबको ?** और दूसरा– सारी जिंदगी एक फकीर की भांति हम लोगों ने निकाली है। मुझे कई बार विचार आता है कि कई कितनी चीजें छोड़ दी हैं, लेकिन छोटी-सी चीज के लिए हम अटक जाते हैं। वो चीजों का अब हमें ध्यान आ जाए...

हमारे यहां प्रकाशभाई हैं, दिनकरभाई ! उसकी बेबी है, उसका दिमाग बहुत अच्छा है। वो चाहे तो वो बोर्ड के अंदर फर्स्ट आ सके, ऐसा उसका दिमाग है। पर, उसका 50 प्रतिशत या ऐसा मार्क आया करे। इधर-उधर थोड़ा पढ़ कर भी मार्क्स सिक्योर कर लेती थी। दीदी ने उसे कहा कि 85 प्रतिशत मार्क्स जो तू ले आएगी, तो मैं तुम्हें ऐसी प्राईस दूंगी कि सब देखते रह जाएंगे। वो लड़की को आनंदी के साथ लगाव भी है। तो उसको हुआ कि ये प्राईस ले लेना है। उस दिन से सबसे ज्यादा उसका प्यारा टी.वी. भी देखना बंद कर दिया। इस बात और एग्ज़ाम के बीच तीस या पच्चीस दिन का फांसला रहा था। पच्चीस दिन उसने ऐसी पढ़ाई करी कि 85 प्रतिशत मार्क्स तो नहीं आए, 72 प्रतिशत मार्क आए। मैं क्या कहता हूँ कि हमें भी कोई बहुत बड़ी चीज काकाजी से पानी है, तो जैसे इसने टी.वी. छोड़ा, नींद छोड़ी वैसे हम अपनी छोटी-छोटी गुत्थियाँ छोड़ दें, प्रेस्टीज इश्यू छोड़ दें, हमारी नादानियाँ छोड़ दें, हमारी वृत्तियों का आनंद छोड़ दें। **यह करने की हमें सूझ मिले, इसलिए ये शिविर है।** तो मैं अब दिनकरभाई से विनती करूंगा कि स्वामिजी आएं तब तक वे इतना बरसें... आज और कल, क्योंकि स्वामिजी के आने के बाद तो हमारा टें-टें करना ठीक भी नहीं है। जो कुछ डाँटना-फटकारना–जो कुछ कहना हो, उसकी अच्छी गाईड लाईन देकर के आप जाएं। **काकाजी का यह परिवार भी एक अलग ढंग से, अलग सोच लेकर के, एक यू टर्न लेकर के फिर चलना शुरु करें।**

... मैं ये कहता हूँ कि **1952 से 1976 तक एक होकर के काकाजी की और पप्पाजी की सेरेछाया में जो जिए, उसके बाद हमारे सारे प्रवाह जो अलग-अलग हो गए, वो इलाहबाद के त्रिवेणी संगम की भांति फिर एक हो जाएं।**

अगर कोई कहता है कि– 'ये तो दिल्ली का सेन्टर है, वहां तो गुरुजी काम कर रहे हैं, स्वाभाविक है गुरुजी की विशेषता रहेगी।' ये दलील अगर हम करते हैं, तो वह हमारी लीपापोती है कि हम काकाजी के सिद्धांत से चलना नहीं चाहते। मुंबई में ताड़देव जाकर देखना, आज भी वो मूर्तियां हैं कि जहां बीच में स्वामिजी की मूर्ति है, साईड में काकाजी की मूर्ति है। ये खूब समझने की बात है। काकाजी चाहते तो वहां आऊटराईट स्टाफ काकाजी का है–बापु, रमेशभाई थे, राजु। बीच में काकाजी की मूर्ति रखी होती, तब तो बड़ी खुशी-खुशी वो प्रतिष्ठा होती। पर, **वो काकाजी ने नहीं करा। यह क्या सिखाता है हमको ?** कि जो सेन्टर में जो हेड हो, उसकी ही विशेषता वहां से जताई जाए, वो उन्हें मान्य नहीं था। इस बात का प्रभाव–अब तो बेला बहन हैं नहीं, उन्होंने काग़ज़ में स्पष्ट लिखा था कि काकाजी की बात को हम समझे हैं क्या ? वो चाहते तो ताड़देव में बीच में इनकी मूर्ति नहीं रखवा सकते थे क्या ? लेकिन उन्होंने बीच में स्वामिजी की रखी और साईड में अपनी ! तो देखो वो लड़की को काकाजी का जेस्चर टच कर गया। वो टच इसलिए करा है कि काकाजी की वो सच्चाई थी। शो-शॉ करने के लिए भी काकाजी ने करा होता ना, तो वो लड़की को वो टच नहीं करता। जगे तब से सुबह; सो...

ये अनिलजी ने गेट बनवाया, मैं तो बड़ा खुश हो गया। ये गेट की भी एक कहानी है। मुझे ऐसा था कि काकाजी की स्वर्णजयंती... गुणातीत समाज के लिए बहुत बड़ा दिन ! एक ऐसी चीज हमेशा के लिए बन जानी चाहिए कि आगे को जो भी आएं उनको ख्याल पड़े कि काकाजी की स्वर्णजयंती मनाई गई थी और उस समय ये मोन्यूमेन्ट बना हुआ था। लेकिन गेट कहां बनाना उसकी जगह सेट हो नहीं रही थी, काफी प्रॉबलम्स आ रहे थे। फिर मुझे विचार आया कि रहने दो–फिलहाल काकाजी की मर्जी नहीं होगी। मेरे मन में बात इस तरह थी कि अभी जगह भी कम है, आगे जाकर जगह मिलेगी, तो आगे कोई करेगा-अभी छोड़ दो। काकाजी के लिए ये संकल्प जो करा है वो तो होना ही है। तो, गलती से मैं ऐसा बोल गया कि चलो नहीं बनता है, तो रहने दो। आज हम नहीं कर पाते, आगे कोई और करेगा। उस बात को सेवकों ने सेन्टीमेन्टली कुछ अलग ढंग से ले लिया कि गुरुजी ने ऐसा कहा कि काकाजी की ये सेवा हम नहीं कर पाते हैं, तो बाद में और कोई कर लेगा। मतलब गुरुजी का कहने का यह है कि हमें ये सेवा का मौका मिला है, लेकिन हम तैयार नहीं होते हैं, तो काकाजी का काम कुछ रुकने वाला नहीं है; वो आगे जाकर कोई और करेगा। मेरा कहने का मतलब उस ढंग से नहीं था। मेरा कहने का मतलब ये था कि अभी जगह नहीं है, करना ही होगा, हमने विचार किया हुआ है–तो आगे को जरूर होगा। फिर ये बात पहुँची आनंदी के पास... तो उसको हुआ कि ऐसा नहीं, ये सेवा तो हमें ही करनी चाहिए। तो, ये अनिल को बुला कर बात करी। फिर अचानक मंदिर और समाधि के बीच की जगह सबको नज़र आ गई। लेकिन बीस-पच्चीस दिन के अंदर इतना बड़ा गेट कैसे बना पाएं ? शिविर के लिए और भी कई कितने काम चल रहे थे मंदिर में। पर, अनिल ने ये काम करा, मैं दंग आ गया हूँ। कल रात को बारह बजे तक तो बल्लियाँ यहाँ लगी हुई थीं और... अनिल का कान्सेप्ट भी बहुत अच्छा था। उसने कहा कि गुरुजी– ये गेट में कोई दरवाजा नहीं रखेंगे। काकाजी वोज़ आल्वेज़ इज़ीली एसेसेबल–खुल्ला गेट ! जब भी जिसको काकाजी के पास जाना हो–जाए। तो वो कान्सेप्ट लेकर ये गेट बनाया। काकाजी ने तो यूं हर चीज़ एकदम खुल्ली रखी हुई है। दिनकरभाई ऐसे आशीर्वाद दे जाएं, संकल्प करें, प्रार्थना करें, सूझ दे जाएं कि अब हम आसानी से इनके करीब पहुँच जाएं। सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

प.भ. पुनीतजी (पानीपत)

... साक्षात्कार से योगीजी महाराज कैसे समर्थ गुरु थे, उसके दर्शन हमें हुए और योगीजी महाराज ने काकाजी के हमें दर्शन कराए। एक-दूसरे के दर्शन हमें हों कि क्या ये विभूतियाँ हमारे बीच में आईं–उस कारण ये प्रसंग बना होगा... नेचरल है कि अपने माईन्ड को लगता है कि कितना बड़ा प्रसंग बना कि काकाजी को साक्षात्कार हुआ, मूर्ति में उनको समाधि हो गई, ऐसी उनकी आँख टिक गई ! हमें क्यों नहीं होता ? या क्या हम भी वैसा कर पाएंगे ? एक साधक में ये विचारधारा चलती रहती है। पर, हमें ये जो गुणातीत विभूतियाँ–जिस-जिस के संबंध में जो-जो आए हैं, चाहे काकाजी के संबंध में आएं, पप्पाजी के संबंध में आएं, हरिप्रसादस्वामिजी के संबंध में आएं या मैं गुरुजी के संबंध में आया या जो दिनकरभाई के संबंध में आएं– **ये जो गुणातीत विभूतियाँ हमें मिलीं, यही हमारा साक्षात्कार है। मुझे साक्षात् प्रभु प्रगट मिले–** चौबीस घंटे उनका आकार मैं देख सकता हूँ ।

मेरे आगे-पीछे हर वक्त मेरे साथ हैं ऐसा अनुभव हो जाना, ऐसी एक निष्ठा बन जाना कि प्रभु मेरे हैं, मेरे साथ हैं, हमेशा हैं, बिलकुल सामने हर वक्त दिल और दिमाग पर, आँखों में– ये साक्षात्कार नहीं तो और क्या है ?

... कहते हैं हर एक इंसान के अंदर भगवान होता है, तो हमें तो हमारे प्रगट प्रभु अंखड हृदय में ऐसे अखंड प्रगट ही हैं। अंदर से ही वे अपने को जवाब देते हैं। बहुत बार ऐसा होता है कि गुरुजी से बात करूं, लेकिन सभा में– बात में अपने आप ही उसका समाधान मिल जाता है। **निष्ठा पकड़ कर चलते हो जाएं, तो हमें सीरीज़ ऑफ एक्सपीरियन्सिस...**, गुरुजी जैसे बताते हैं कि आप बीलीफ रखो कि जो हमें मिले हैं– जो स्वरूप हमें मिले हैं, वो ही हमारे लिए सर्वोपरि, वो ही हमारा हित करने वाले हैं और कोई दूसरा नहीं कर पाएगा...

आज भगवान ने भी हमारी ही वृत्तियों के– हमारी नेचर के मुताबिक वर्तने वाले अपने अनेकों स्वरूप हमारे बीच में छोड़े हुए है। अभी उत्तर भारत में यहां एक कल्चर डिफरन्ट होगा– पंजाब में, हरियाणा में, दिल्ली में। साऊथ में अलग होगा,गुजरात में अलग होगा, हमारा नेचर थोड़ा ऐसा अलग रहेगा ही। वैसा-वैसा वर्तने वाले स्वरूप हमें सब जगह मिले हुए है। यूं, **प्रभु अपने लेवल पर आकर हमारी नेचर के मुताबिक हमें वर्तातें हैं** और हमें ऐसा अनुभव कराते हैं कि मैं तुम्हारे साथ ही हूँ। वो परिश्रम करते रहते हैं हमें यह समझाने के लिए... गुरुजी समझाते हैं कि 'निष्ठा' भी– कैमरा जैसे क्लिक करता है और तस्वीर बना लेता है वैसी बात है। ये प्रोसेस भी ऐसा ही है कि इमीजिएट्ली क्लिक हो जाए तो हो जाए, नहीं तो प्रोसेस चलता ही रहे, बहुत लंबा प्रोसेस...

ऐसे स्वरूपों का हमारे बीच में रहना बहुत बड़ी कीमती चीज है। ये स्वरूप अगर अपने रुप में आ जाएं तो हम उसको झेल नहीं पाएंगे। इसलिए **हमारी कक्षा पर, हमारी नेचर के मुताबिक हमें लुभा कर–घूम फिर कर इनकी बस एक ही क्रिया कि किसी तरीके से ये प्रभु में जुड़ा रहे। इसको किसी तरीके से प्रभु के प्रति लगाव लगा रहे।** इनकी हर क्रिया में यही रहेगा...

प.पू. गुरुजी हमें क्या विभूति मिले ? काकाजी महाराज के हम कितने धन्यवाद करें ? इसका हम विचार करें। थोड़ा भी ख्याल रखें कि इन्होंने हमें बहुत एक्सपीरिएन्सिस कराए हैं। मैं पक्का मानता हूँ कि **जो गुरुजी से जुड़े हुए हैं, गुरुजी के उनको बहुत एक्सपीरिएन्सिस हुए होंगे। जो जिस-जिस स्वरूप से जुड़ा है उन्हें उन स्वरूपों ने जरुर एक्सपीरिएन्स करवाया ही होगा...**

आज हम काकाजी के प्रसंग पर इकट्ठे हुए हैं, तो हमें ये समझदारी से पकड़ना होगा कि काकाजी प्रगट ही हैं। हम ऐसा भजनों में भी गाते हैं और ये प्रगट ही हैं ऐसा हमारा विश्वास और हमारी निष्ठा भी है !

...हम कहते हैं स्वामिनारायण भगवान प्रगट हैं, कैसे ? अपने संतों द्वारा। ऐसे ही काकाजी प्रगट हैं। पर, कैसे ? मैं अभी विचार में ही था कि राकेशभाई के मुँह से निकला कि काकाजी के तीन स्वरूप–तीनों यहाँ विराजमान ! तो, काकाजी कैसे प्रगट ? गुरुजी के रूप में, प.पू. दिनकरभाई के रूप में, पू. भरतभाई के रूप में !

मुझे पता है कि गुरुजी को यही पसंद आएगा कि काकाजी के प्रति मेरी निष्ठा रहे। सच्चे गुणातीत संत की ये सबसे बड़ी पहचान है कि वो अपने गुरु को आगे रखेगा... गुणातीत परंपरा की विशिष्ट बात यह है कि हमेशा अपने गुरु को आगे रखेगा। एक बार शिविर में बात भी आई थी कि जितना बड़ा स्वरूप, जितना बड़ा साधु, जितना बड़ा संत– उतना वो सरल और अपने को उतना ही वो छुपा रखेगा... हमें काकाजी अभी भी प्रगट स्वरूप में ऐसे मिले हुए हैं, मुझे जैसे प.पू.गुरुजी के रूप में या जिसको जहां पर भी दिनकरभाई से, भरतभाई से भी–तो अब हम प.पू. काकाजी की मेहनत को, उनके साक्षात्कार को– जो हम यहां मनाने के लिए इकट्ठे हुए हैं, उसको व्यर्थ ना जाने दें...

प.भ. पुरी साहेब

... पिछले दस साल में मैंने पू. गुरुजी के जीवन में काकाजी के सिवा कुछ नहीं देखा और हमेशा उनका मन ऐसा कि किसी तरह काकाजी राजी हो जाएं। **वो हर वक्त इस कार्य के लिए मौके की तलाश में रहते हैं।** किसी भक्त के लिए–कोई उसकी पारिवारिक, कोई उसकी मानसिक या किसी तरह की कोई प्रॉब्लम हो तो गुरुजी के मन में बस इतना कि काकाजी राजी हो जाएं...

हमें तो इतनी बड़ी लिबर्टी है कि हम अपने गुरु से आँखों से आँखें मिला कर बात कर सकते हैं। ही इज़ इज़ीली एसेसिबल और **मंदिर में सभी सेवकों को ऐसे आदेश कि कोई भी आए करे–बिना समय को देखे और अगर मैं आराम में भी हूँ, तो मुझे जगाया जाए, आने के अलावा फोन आए तब भी जगाया जाए।** अरे ! **ऐसी चीजें हमें कहां मिलेंगी ?**

प.पू. दिनकरभाई

काकाजी की जो परावाणी है वो सुनने का इतना दिल हो रहा है और ये कैसेट वैसे पहली बार सुनी है मैंने। मगर जो प्रसंग अंदर आए हैं वो काकाजी उधर भी अमेरिका भी जब आते थे, ये बहुत बताते थे। हम सब भी इसलिए इधर आए हैं, कि हमारे अंदर की जो श्रद्धा है, वो बढ़ती जाए। मगर साथ में एक दूसरी भी तकलीफ है, जो कि काकाजी बता रहे थे कि अंदर एक नास्तिक भी है। हम बोलते हैं कि हम मानते हैं– प्रभु में मानते हैं; मगर काकाजी बोलते हैं कि हम **श्रद्धालु नास्तिक** हैं। हम श्रद्धालु भी हैं और नास्तिक भी हैं और वो नास्तिकता कैसे चली जाए, कैसे मिट जाए वो काकाजी हमको बता रहे थे। हम सब बुद्धि वाले हैं, हम सब एक समझ से वैज्ञानिक भी हैं और वैज्ञानिक का जो हमको अंदर से गर्व मिलता है, वो बंधन रूप हो जाता है।

काकाजी वो बताना चाहते थे कि सालों से एपल ट्री से नीचे गिरता ही रहता था, मगर न्यूटन के दिमाग में विचार आया कि ये सफरजन नीचे क्यों गिरा और ऊपर क्यों नहीं गया ? हम सब देखते थे मगर हमने वो एक्सेप्ट कर लिया-मान्य कर लिया था। न्यूटन ने उसके एक स्टेप से आगे जाकर सोचा कि नीचे क्यों आया, ऊपर क्यों नहीं गया ? और फिर उसने रात-दिन लगा कर ये थियेरी निकाली – न्यूटन के लॉज़ ऑफ मोशन– जो हम सब ने पढ़े हैं। और न्यूटन के बाद वैज्ञानिकों ने ये थियेरी को एक्सेप्ट किया और ये थियरी यूनीवर्सली एक्सेप्ट हो गई। पर जब आईन्सटाईन आया और आईन्सटाईन ने थियेरी ऑफ रिलेटीविटी और यूनीवर्सल ग्रेवीटेशन का नया सिद्धांत बताया, तो ये न्यूटन का सिद्धांत चला गया, वो लिमिटेड हो गया। अभी, रूपित मुझे यूनीवर्स के क्रीयेशन की तीन-चार पुस्तक दे गया था, वो मैं पढ़ रहा था। उसके अंदर ये बताया गया कि न्यूटन का जो नियम है वो पृथ्वी के लिए ही लागू पड़ता है– सूर्य मंडल के लिए ही लागू पड़ता है। मगर सूर्य मंडल से बाहर निकल जाओ, तो वो नियम काम नहीं करेगा। दूसरा, साईन्स में वो ब्लेक होल की थियेरी आती है... आईन्सटाईन की थियेरी उसमें फिट हो गई, मगर न्यूटन की थियेरी फिट नहीं हो सकती।

तो काकाजी ये बता रहे हैं कि हम जो हमारी पुरानी स्टाईल है, आदतें हैं वो हिसाब से प्रभु को पाने के लिए प्रयत्न करेंगे, तो बहुत टाईम निकल जाएगा। वैसे कल ही हम रात को गुरुजी के साथ प्रदर्शनी में काकाजी के प्रसंग देख रहे थे जिसमें दासस्वामी का प्रसंग लिखा है... मुझे बहुत पसंद आ गया वो। मैंने गुरुजी को पूछा भी कि यह कौन से रेफरेन्स में था ? ... गुरुजी हैं, वो काकाजी से बहुत नज़दीक में हैं और जब ऐसे प्रसंग लिखे हैं तो उसका कोई बेकग्राऊंड होगा जिससे कि हमें ज्यादा प्रकाश मिले। उसमें लिखा है कि **दासस्वामी ! आपणे हवे डमणियामां दिल्ली नहीं जई शकीए। हम वो पुरानी बैलगाड़ी से गुजरात से निकल कर दिल्ली नहीं आ सकते**... उसमें दो-तीन आदमी बैठ सकें या थोड़ा-सा सामान रख सकें और बैल भी छोटे होते हैं। उसको 'डमणिया' कहते हैं। तो काकाजी ने दासस्वामी को यह बोला– दासस्वामी हम डमणिया में दिल्ली नहीं जा सकते। यह समझना है कि दासस्वामी कोई ऐसे सामान्य साधु नहीं हैं। दासस्वामी हैं वो शास्त्री हैं, संस्कृत के बड़े मास्टर हैं। और वैसे ही उसकी फेमिली में प्रभु की कृपा से जो भी उनके भाई हैं, सबको प्रभु की कृपा से ऐसा ज्ञान है। वो हेमंतभाई मर्चंट को भी देखें या तो डॉक्टर महेन्द्रभाई मर्चंट को भी देखें, महापुरुषस्वामी को भी देखें। सब, बड़े इन्टेलीजेन्ट हैं, बड़े समझदार हैं। नहीं तो दासस्वामी साधु कैसे होते ? जब कुछ देखा होगा योगीजी महाराज के अंदर– तब और उनका नाम दासस्वामी वैसे नहीं है। दासस्वामी तो उसका लाडका नाम है। उसका योगीजी महाराज ने जो नाम रखा है वो 'यज्ञवल्लभ' नाम है। एक बार दासस्वामी बता रहे थे कि हम सत्संग में आते हैं तो उसकी शुरुआत महिमा से होती है। महिमा होगा तभी हम इधर आते हैं। महिमा नहीं होता तो कितना भी अच्छा हो, पर इधर नहीं आ पाते। तो ये सत्संग में हम आए हैं वो महिमा से आए हैं और जो पूर्णाहुति–वो महिमा से होने वाली है। महिमा से जो पूर्णाहुति नहीं होगी, तो हमारा रास्ता लंबा हो जाएगा और ये पूर्णाहुति कैसे हो, वो काकाजी फर्स्ट पाईन्ट में बता रहे थे। शुरुआत जो महिमा से है और पूर्णाहुति जो महिमा से है। उसके बीच का टाईम जो हैं, वो बड़ा खतरनाक है। उसमें अमहिमा आ जाता है। किसी का कुछ दिखाई देता है, किसी के साथ कुछ ऐसी गांठ पड़ जाती है और जब यह हो गया तो हमारी पूर्णाहुति नहीं हो पाएगी। इसलिए काकाजी ने वो 26 जनवरी की कैसेट में सुनेंगे, तो देवीबेन को निमित्त बना कर बोला है कि देवीबेन किनारे आवेलुं वाहण बुड़वा नहीं देता। किनारे आया हुआ जो स्टीमर है, उसको डूबने नहीं देना। उसके ऊपर भी– काकाजी ने अपने जाने के टाईम से पहले ये बात एक बार नहीं बोला है, काकाजी ने दोबारा बोला है। क्यों बोला है ? काकाजी पारदर्शी पुरुष थे। **काकाजी को दिख रहा था** और काकाजी हमारी मानसिक भूमिका मानो तो वो, हमारा वर्तन मानो तो **वो–** उसको **जानते थे कि जब तक मैं हूँ तब तक तो आप मेरी बात सुनते हैं और हाँ-हाँ करते हैं। मगर जब आपको इन्डिपेन्डेंटली स्वतन्त्रता से निर्णय लेना होगा, तब किनारे आया हुआ ये स्टीमर है, वो डूब नहीं जाए वो बहुत ख्याल से देखना पड़ेगा...**

...आध्यात्मिकता में विश्वास और आस्तिकता होनी चाहिए और काकाजी ने उस टाईम पर बोला मुझे कि हमें तो जो अभी प्रभु मिले हैं उसको पकड़ो। हमें जो ऐसे गुरुजी मिले हैं, उसके अंदर टोटल मिल जाओ। हमें जो ऐसे गुणातीत स्वरुप मिले हैं, उसके साथ टोटल जुड़ जाओ। **मगर हमारे माईन्ड का कोई एक पोर्शन है वो नहीं जुड़ने देता।** सो काकाजी बोलते हैं कि वो बनावट कर रहे हैं। गुरुजी खुल्ले दिल के हैं, काकाजी के साथ उनका बाप-बेटे का संबंध था... वो सिन्सियरीटी है, ऑनस्टी है। हमें वो नास्तिकता निकालनी है। **नास्तिकता कैसे निकले इसलिए हम ये शिविर कर रहे हैं,** इसलिए हम इधर आए हैं और **अंदर की हमारी जो एक स्वीच है, वो ऑन नहीं होती है, जो हम ही पकड़ कर बंद रखते हैं उसको ऑन करनी है। इसलिए इधर हम आए हैं। काकाजी का जो साक्षात्कार** है, काकाजी बोल रहे थे कि मेरा साक्षात्कार **कोई सामान्य नहीं है।** वैसे लगे कि अभिमान की बात आ गई, अभिमान की बात नहीं। ये जो समाधि प्रकरण है, साक्षात्कार का जो चेप्टर है वो पहला नहीं था और अंतिम भी नहीं था। स्वामिनारायण भगवान के समय से पहले भी समाधि होती थी। स्वामिनारायण भगवान के टाईम में भी भगवान ने बहुत समाधि करवाई–अक्षरधाम के दर्शन करवाए। उनके बाद गोपाळानंदस्वामी भी बहुत समाधि करवाते थे, गुणातीतानंदस्वामी ने भी समाधि करवाई। शास्त्रीजी महाराज के समय भी समाधि होती थी और योगीजी महाराज ने भी समाधि करवाई। वो बड़े पुरुष समाधि तो करवा सकते हैं। मगर **समाधि के बाद क्या ? साक्षात्कार के बाद क्या ? आपके अंदर परिवर्तन आया ? आपके अंदर पूर्ण विश्वास आया ? नहीं आया है तो वो समाधि क्या काम करेगी ? वो सपना हो जाएगा,** वो काम नहीं करेगा... काकाजी को समाधि की जरुरत नहीं थी। **योगीजी महाराज ने समाधि करवाई वो काकाजी के लिए जरुरत नहीं थी। उनको पहले से ही ऐसा साक्षात्कार था। मगर हमारे दिल में बैठे, हमारे दिमाग में कोई ऐसा चमत्कार बैठे तभी पता चलता है।**

अभी मैं वो एक पत्रिका पढ़ रहा था, जो हमारे प्रमुखस्वामी के मंदिर में से निकलती है। 1949 में दवे साहेब– जिन्होंने बहुत पुस्तक भी लिखे हैं, उन्होंने न्यूज़ पेपर में पढ़ा कि शास्त्रीजी महाराज जैसे कोई संत हैं, वो समाधि करवाते हैं और समाधि में साकर आती है, मिठाई आती है और सब खाते हैं। ऐसा वो समाधि का न्यूज़ पेपर में वर्णन था। तो दिल में एक भाव पैदा हुआ कि ऐसे समाधि वाले पुरुष के दर्शन हो जाएं तो ? और उस टाईम पर शास्त्रीजी महाराज बम्बई में पधारे थे और ये हर्षदभाई दवे थे, उनको बुखार आया था। उनके भाई महिपतभाई ने बताया कि वो शास्त्रीजी महाराज हमारी गली में ही एक हरिभक्त हैं, उनके मकान में ही ठहरे हैं। वो हर्षदभाई ने लिखा है कि मेरे अंदर कोई ऐसी ताकत आ गई, बुखार था, मैं चल भी नहीं सकता था, पर मैं दौड़ा। दौड़ कर उधर दो माल का जो मंजला था जहां शास्त्रीजी महाराज थे, वो मैं चढ़ गया और उनके दर्शन कर लिए। उन्होंने मेरे हाथ को पकड़ा। और हाथ को पकड़ने से मुझे इतनी ठंडक लगी, जो कि मैं आज भी नहीं भूल सकता। देखो अनुभव तो सबको होते हैं। जिसको बुखार है उसको कोई भी छुएगा, तो उसका हाथ ठंडा ही लगेगा। मानो हमको बुखार है, हमारे हाथ में गर्मी है, तो जो चीज ज्यादा गर्म नहीं है वो हमें ठंडी ही लगेगी। ये साईन्टिफिक है, नॅचरल है कि शास्त्रीजी महाराज का हाथ ठंडा ही लगेगा। मगर **जो भावना से वो गए थे, जो दिल की सच्चाई से गए थे, वो भावना ने वो काम किया** और **ठंडक लगी इतना ही नहीं वो ठंडक का अंदर प्रोग्राम हो गया कि ये कोई दिव्य पुरुष हैं।**

गुरुजी के साथ भी हमारा बार-बार ऐसा संबंध होता रहता है, बार-बार ऐसे प्रसंग होते रहते हैं। मगर वो इतना प्रभावशाली हो जाए कि यही प्रसंग में हमें गुरुजी जैसे हैं वैसा पूरा दर्शन हो जाए। गुरुजी क्या हेतु लेकर यहां आए हैं, वो दर्शन हो जाए। तब ये साक्षात्कार की स्वर्णजयंती पूरी मानी गई ! ...काकाजी बोलते हैं कि इधर कोई भी आए, राम में मानने वाला, कृष्ण में मानने वाला, जैन में मानने वाला, ईसु ख्रिस्त का मानने वाला – **हम किसी को बदलने का प्रयत्न नहीं करते हैं कि आप कृष्ण में से स्वामिनारायण बन जाओ या आप जैन में से स्वामिनारायण बन जाओ।** काकाजी ने बोला कि **हमारा वो तरीका नहीं है। हमारा तरीका यह है कि आप कृष्ण को मानते हो तो कैसे मानते हो ?** कल हम इधर प्रवचन सुन रहे थे तो गुरुजी बात बता रहे थे कि एक बार **काकाजी ने पूछा कि आपने योगीजी महाराज को देखा है ?** गुरुजी कल बता रहे थे तो मुझे भी आश्चर्य जैसा हो गया कि ये सवाल कैसा है ? जो गुरु ने मुझे दीक्षा दी है, साधु बनाया है, जो गुरु के प्रेम से मैं सब संसार छोड़ कर साधु बन गया और काकाजी बोलते हैं कि योगीजी महाराज के दर्शन करे हैं ? ये अलग सवाल है और ये काकाजी ही गुरुजी को कह सकते हैं। तो **हम भी जो इधर आए हैं, हम भी ऐसा कुछ दर्शन कर लें। स्वर्णजयंती के महोत्सव से ऐसा लेकर जाएं कि हमारी जो स्वीच है वो ऑन हो जाए...**

सो काकाजी को दिल से सुनना है, वो इतना दिल से सुनना है कि जो गुरुजी का संकल्प है, गुरुजी का ये इधर लाने का अभिप्राय है, वो पूरा हो जाए। मगर साथ में काकाजी ने लास्ट ऐसा बोला कि **हम सब इधर आए हैं, मगर होगा करोंड़ों में से किसी एक का** ! इसका मतलब ये नहीं है कि हमारा नहीं होगा, **उसका मतलब ये है कि मेरा होगा।** तो हम काकाजी के आगे के आशीर्वाद सुनें...

(ध्वनिमुद्रण से संकलित आशीर्वचन एवं प्रवचन– क्रमशः)

'स्वर्णजयंती ... स्वर्णजयंती ...'

(रागः 'महाभारत'– टाईटल साँग)

स्वर्णजयंती... स्वर्णजयंती... स्वर्णजयंती
आ... आ... आ... आ...
गाथा दादुकाका की, गाथा दादुकाका की,
आ... दादुकाका की, दादुकाका की
अवनी के धूमकेतु की, नए युग के क्रांतिवीर की,
योगी के सपूत की, योगी के वारिसदार की,
योगी की पहचान कराई, काकाजी ने सत्संग में,
योगी की पहचान कराई...

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत,
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।
जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वतः।
त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म,
नैति मामेति सोऽर्जुन।।

रोम रोम से बहे तेरे, श्रीजी का रणकार ;
देश-विदेश में योगी की,
योजना करी साकार।
गढडा मेरा, मैं गढडा का, श्रीजी के उद्‌गार ;
दिल्ली मेरी, मैं दिल्ली का,
दिया तूने अभय वरदान।
काका - पप्पा - कांतिकाका
की त्रिपुटी ने किया कमाल,
किया कमाल, किया कमाल, किया कमाल...।
भक्तों की पराभक्ति, मैत्रीभाव की शक्ति ;
निर्दोषबुद्धि का नवनीत,
आ... आ... निर्दोषबुद्धि का नवनीत,
योगी की ही आसक्ति। आ... आ...
प्रगटस्वरूप की स्मृति, स्वामिनारायण मंत्रशक्ति,
जीतेजी धाम का सुख, ब्राह्मीस्थिति व मुक्ति।
अध्यात्म में नव युग का, काका ने किया आगाज़;
गुणातीत समाज की स्थापना, की स्वर्णजयंती आज।

(रागः दिल वाले... दिल वाले तेरा नाम क्या है...)

ऋण तेरा... ऋण तेरा हे काकाजी कोई कैसे चुकाए,
ऋण तेरा हे काकाजी कोई कैसे चुकाए,
अनंत तेरे एहसान हैं हम पर क्या-क्या गिन पाएं।
जय काकाजी, जय काकाजी,
जय काकाजी, जय काकाजी...

योगी वचन से जंग में कूदे,
नंदाजी को विजयी बनाया,
योगीजी का अनुग्रह पाकर,
ओ... असली नारायण को देखा,
योगीजी में...
योगीजी में प्रगट हैं शास्त्रीजी ये समझाया ;
योगीजी श्रीजी का स्वरूप हैं,
ये उद्‌घोष किया।
जय काकाजी... जय काकाजी...
जय काकाजी... जय काकाजी...

योगी का अभिप्राय जान के तूने,
शिक्षित युवकों को साधु बनाने ;
बहनों को भी प्रभु भजवाने,
ओ... तूने अपमान, बदनामी झेली,
जंग खेली...
जंग खेल के विजयी हुए माया को फटकारा,
अध्यात्म नूतन समाज का सर्जन तूने किया।
जय काकाजी... जय काकाजी...
जय काकाजी... जय काकाजी...

हर क्षितिज में किला जीतने,
ऊँट की भांति कुर्बान हो गए,
अपना सब कुछ माना साझा तूने,
ओ... घोंसले हमने चाहे अलग बनाए,
घूंट विष का...
घूंट विष का पीकर तूने, हमें अमृत पिलाया,
नींव में समा जाकर, हमें सरताज बनाया।
जय काकाजी... जय काकाजी...
जय काकाजी... जय काकाजी...

शास्त्रीजी और योगीजी का,
संबंध देख कर फनां हो गए,
चैतन्यों का प्रहरी बन कर,
ओ... तूने अपने लहू से सींचा,
आहुति दी...
आहुति दी 'योगी यज्ञ' में, सर्वस्व लुटाया,
संप, सुहृद्‌भाव, एकता से जीकर बताया।
जय काकाजी... जय काकाजी...
जय काकाजी... जय काकाजी...
जय काकाजी... जय काकाजी...
जय काकाजी... जय काकाजी।

✸✸✸

(राग- मेरे देश की धरती सोना उगले...)

जय-जय काकाश्री ऽऽऽ...
जय-जय काकाश्री महिमा तेरी हम सब हर पल गाएं,
जय-जय काकाश्री -2
जय-जय काकाश्री महिमा तेरी हम सब हर पल गाएं,
जय-जय काकाश्री -2
आ... आ... आ... ओ... ओ... ओ...

उत्तर भारत में सत्संग का,
ये बीज आपने बोया है -2
उद्धार करने सब मुक्तों का,
'गुरुजी' को बगीचा सौंपा है -2
ओ... ऽऽ... ओ...
कोई भी अपेक्षा रखे बिना -2,
निरपेक्ष प्रेम ही बरसाया -2
दिन-रात और देह गिने बिना,
पैग़ाम योगी का फैलाया -2
जय-जय काकाश्री ऽऽऽ...
जय-जय काकाश्री महिमा तेरी हम सब हर पल गाए,
जय-जय काकाश्री...जय-जय काकाश्री...

गुणातीत समाज के ज्योतिर्धरों की,
करवाई पहचान तूने -2
उत्तर की बहनों का श्रेय करने,
'दीदी' की दे दी भेंट हमें -2
ओ... ऽऽ... ओ...
गल्तियों को नज़रअन्दाज़ किया-2,
रोग जीव के तूने निर्मूल किए-2
हमजोली बन कर साथ रहे,
बस मौज में प्रभु संबंध दिया -2
जय-जय काकाश्री ऽऽऽ...
जय-जय काकाश्री महिमा तेरी हम सब हर पल गाए,
जय-जय काकाश्री...जय-जय काकाश्री...

हर मोरचे पर आगे रह कर,
हर वार तूने सीने पे लिया -2
अपनी प्रतिभा को ढक के सदा,
धन्यवाद साथीदारों को दिया -2
मुक्तों को कटु लगे तो भी -2
अज्ञान पे उनके प्रहार किया, मूलवृत्ति पे उनकी प्रहार किया,
गुणातीत भाव को पाए सभी,
तूने तो यही प्रयास किया -2
जय-जय काकाश्री ऽऽऽ...
जय-जय काकाश्री महिमा तेरी हम सब हर पल गाए,
जय-जय काकाश्री...जय-जय काकाश्री...

संबंध से ही निश्चिंत किया,
आश्रितों को निहाल किया -2
करने सनाथ सब मुक्तों को,
'गुरुजी' का संबंध अनमोल दिया -2
ओ... ऽऽ... ओ...
स्वामिनारायण अलख जगा -2
भवसागर से है पार किया -2
आत्मबुद्धि प्रीति से जुड़ा -2,
नूतन समाज तैयार किया -2
जय-जय काकाश्री ऽऽऽ...
जय-जय काकाश्री महिमा तेरी हम सब हर पल गाए,
जय-जय काकाश्री...जय-जय काकाश्री...

काका की जय जयकार करें,
'गुरुजी' के स्वरूप को पहचानें -2
अभिप्राय को...
अभिप्राय को उनके समझे हम,
उनकी पसंद के पात्र बनें -2
मिलजुल के रहें सब मुक्तों से ऽऽ...
निर्दोष बनें मन-बुद्धि से ऽऽ...
सर्वस्व समर्पण कर दें हम -2,
रंग लें जीवन पराभक्ति से -2
जय-जय काकाश्री ऽऽऽ...
जय-जय काकाश्री महिमा तेरी हम सब हर पल गाए,
जय-जय काकाश्री...जय-जय काकाश्री...
आ... आ... आ... ओ... ओ...ओ...

✸✸✸

चातुर्मास के नियम... (20 जुलाई 2002, शनिवार से 15 नवम्बर 2002, शुक्रवार तक)

1. छोटी-मोटी हर एक दैनिक क्रियाओं का आरम्भ भगवत्स्वरूप संत की स्मृति समेत एकाध मिनिट जपयज्ञ या अजपाजप करके ही करें।
2. जिन्हें सुविधा हो वे-शाम की धून व कथा में मंदिर आएं। जो ना आ पाएं वे अपने घर पर सुबह 20 मिनट धून व सायं आरती के बाद 20 मिनिट धून अचूक करें।
3. प.पू. काकाजी की 'पुष्प समाधि' की रोज 31 प्रदक्षिणा करें। जो रोज ना आ पायें वे चातुर्मास के दौरान जब भी मंदिर आएं तब 51 प्रदक्षिणा कर जायें।
4. सावन का पूरा महीना यानि–9 अगस्त से 7 सितंबर तक एक बारी भोजन लें।
5. 20 जुलाई-नियम की एकादशी, 31 अगस्त-जन्माष्टमी, 17 सितंबर-जलझीलनी एकादशी, 15 नवम्बर-कार्तिक शुक्ला एकादशी–इन चारों दिनों अवश्य व्रत रखें।
6. अवतार पुरुषों व भगवत्स्वरूप संतों की जीवनी एवं वचनामृत, स्वामी की बातें, पत्र संजीवनी, ब्रह्मप्रवाह, ब्रह्मविद्या व मोती बिखरे चौक में जैसे अध्यात्मग्रंथों एवं 'भगवत् कृपा' सत्संग पत्रिका के मननीय लेखों का रोज नियम से अध्ययन करें या आधा घंटा संतों की परावाणी टेप द्वारा सुनें या तो वीडियो कैसेट द्वारा दर्शन व कथा का लाभ लें।
7. रोज सुबह या सायं चालीस मिनिट तेज़ वॉकिंग करें।
8. साक्षात्कार स्वर्णजयंती का वर्ष चल रहा है... प.पू. काकाजी 'सत्कर्म' पर खूब जोर देते थे। तो, चातुर्मास दौरान रोज एक 'सत्कर्म' करने का विशिष्ट नियम रखना।

व्रतोत्सवसूची

(1) दि. 20.7.2002, शनिवार – देवशयनी एकादशी, व्रत – चातुर्मास प्रारंभ

(2) दि. 24.7.2002, बुधवार – **गुरुपूर्णिमा**

(3) दि. 5.8.2002, सोमवार – एकादशी, व्रत

(4) दि. 18.8.2002, रविवार – एकादशी, व्रत

(5) दि. 22.8.2002, गुरुवार – श्रावणी पूर्णिमा – राखी
(सुबह 7:00 से 9:00 प.पू. गुरुजी की निश्रा में सच्चा रक्षाकवच प्राप्त करने प्रार्थना करेंगे। जो इस समय पर ना आ पाएं, वे दिन में किसी भी समय आ करके 'राखी' बंधवा सकेंगे।)

(6) दि. 31.8.2002, शनिवार – जन्माष्टमी, व्रत

(7) दि. 1.9.2002, रविवार – **प्र. ब्र. स्व. प.पू. पप्पाजी का प्रागट्य दिन**

(8) दि. 3.9.2002, मंगलवार – एकादशी, व्रत

(9) दि. 10.9.2002, मंगलवार – गणेश चतुर्थी

Air Mail
'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine
Despatched on 15th of alternate months from January
If undelivered please return to :—
Printer, Publisher, Editor :—
SHRI PRABHAKAR RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI
'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg,
Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Type Setting : **SHAYOKA Type Setting**
Rama Vihar, Delhi-110081 Phone: 5950443
Printed at : **Delux Offset Printers**
308/4, Shahzadabad, Opp. Rohtak Road, Daya Basti, Delhi

TO,